कथा सरिता

जो जैसा... वैसा ही मूल्यांकन

एक आदमी ने गौतम बुद्ध से पूछा : जीवन का मूल्य क्या है? बुद्ध से उसे एक पत्थर दिया और कहा: जा और इस पत्थर का मूल्य पता करके आ, लेकिन ध्यान रखना कि इस पत्थर को बेचना नहीं है।

वह आदमी उस पत्थर को बाज़ार में एक संतरे वाले के पास लेकर गया और बोला: इसकी कीमत क्या है? संतरे वाला चमकीले पत्थर को देखकर बोला, ''बारह संतरे ले जा और इसे मुझे दे जा'' आगे एक सब्जी वाले ने उस चमकीले पत्थर को देखा और कहा, 'एक बोरी आलू ले जा और इस पत्थर को मेरे पास छोड़ जा' आगे वो एक सुनार के पास गया, उसे पत्थर दिखाया। सुनार उस चमकीले पत्थर को देखकर बोला, '50 लाख में बेंच दे'। उसने मना कर दिया तो सुनार बोला 'दो करोड़ में दे दे या बता इसकी कीमत जो मांगेगा वह दूंगा तुझे... उस आदमी ने सुनार से कहा ' मेरे गुरु ने इसे बेचने से मना किया है। आगे हीरे बेचने वाले एक जौहरी के पास गया, उसे पत्थर दिखाया। जौहरी ने जब उस पत्थर को देखा, तो पहले उस पत्थर के पास एक लाल कपड़ा बिछाया, फिर उसकी परिक्रमा लगाई, माथा टेका।

फिर जौहरी बोला : 'कहाँ से लाया है ये बेशकीमती रूबी? सारी कायनात, सारी दुनिया को बेचकर भी इसकी कीमत नहीं लगाई जा सकती। ये तो बेशकीमती है।'

वह आदमी हैरान परेशान होकर सीधे गौतम बुद्ध के पास आया। अपनी आप बीती बताई और बोला ''अब बताओ भगवन, मानवीय जीवन का मूल्य क्या है?

बुद्ध बोले: संतरे वाले को दिखाया, उसने इसकी कीमत '12 संतरे' की बताई। सब्जी वाले के पास गया, उसने इसकी कीमत '1 बोरी आलू' बताई। आगे सुनार ने '2 करोड़' बताई और जौहरी ने इसे 'बेशकीमती' बताया।

अब ऐसा ही हिसाब मानवीय मूल्य का भी है।

तू बेशक हीरा है... लेकिन सामने वाला तुम्हारी कीमत अपनी औकात, अपनी जानकारी, अपनी हैसियत से लगायेगा। घबराओ मत, दुनिया में तुझे पहचानने वाले भी मिल जायेंगे।

देने में ही...लेना

एक भिखारी सुबह-सुबह भीख मांगने निकला। चलते समय उसने अपनी झोली में जौ के मुट्ठी भर दाने डाल दिए, इस अंधविश्वास के कारण कि भिक्षाटन के लिए निकलते समय भिखारी अपनी झोली खाली नहीं रखते। थैली देखकर दूसरों को भी लगता है कि इसे पहले से ही किसी ने कुछ दे रखा है।

पूर्णिमा का दिन था। भिखारी सोच रहा था कि आज अगर ईश्वर की कृपा होगी तो मेरी यह झोली शाम से पहले ही भर जाएगी। अचानक सामने से राजपथ पर उसी देश के राजा की सवारी आती हुई दिखाई दी। भिखारी खुश हो गया। उसने सोचा कि राजा के दर्शन और उनसे मिलने वाले दान से आज तो उसकी सारी दरिद्रता दूर हो जाएगी और उसका जीवन संवर जाएगा। जैसे जैसे राजा की सवारी निकट आती गई, भिखारी की कल्पना और उत्तेजना भी बढ़ती गई। जैसे ही राजा का रथ भिखारी के निकट आया, राजा ने अपना रथ रुकवाया और उतर कर उसके निकट पहुँचे। भिखारी की तो मानो सांसें ही रुकने लगी, लेकिन राजा ने उसे कुछ देने के बदले उल्टे अपनी बहुमूल्य चादर उसके सामने फैला दी और उससे भीख की याचना करने लगा। भिखारी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अभी वह सोच ही रहा था कि राजा ने पुन: याचना की। भिखारी ने अपनी झोली में हाथ डाला मगर हमेशा दूसरों से लेने वाला मन देने को राज़ी नहीं हो पा रहा था।

जैसे तैसे करके उसने दो दाने जौ के निकाले और राजा की चादर में डाल दिए। उस दिन हालांकि भिखारी को अधिक भीख मिली, लेकिन अपनी झोली में से दो दाने जौ के देने का मलाल उसे सारा दिन रहा। शाम को जब उसने अपनी झोली पलटी तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। जो जौ वह अपने साथ झोली में ले गया था, उसके दो दाने सोने के हो गए थे। अब उसे समझ में आया कि यह दान की महिमा के कारण ही हुआ। वह बहुत पछताया कि- काश! उस समय उसने राजा को ओर अधिक जौ दिए होते, लेकिन दे नहीं सका, क्योंकि उसकी देने की आदत जो नहीं थी। शिक्षा- देने से कोई चीज़ कभी घटती नहीं। लेने वाले से देने वाला बड़ा होता है।

खूबसूरत ज़िन्दगी में कूड़ा ना डालें...

एक दिन एक व्यक्ति ऑटो से रेलवे स्टेशन जा रहा था। ऑटो वाला बड़े आराम से ऑटो चला रहा था। एक कार अचानक ही पार्किंग से निकलकर रोड पर आ गई। ऑटो चालक ने तेज़ी से ब्रेक लगाया और कार, ऑटो से टकराते-टकराते बची।

कार चालक गुस्से में ऑटो वाले को ही भला-बुरा कहने लगा जबकि गलती कार-चालक की थी। ऑटो चालक एक सत्संगी(सकारात्मक विचार सुनने-सुनाने वाला) था। उसने कार वाले की बातों पर गुस्सा नहीं किया और क्षमा मांगते हुए आगे बढ़ गया। ऑटो में बैठे व्यक्ति को कार वाले की हरकत पर गुस्सा आ रहा था और उसने ऑटो वाले से पूछा, तुमने उस कार वाले को बिना कुछ कहे ऐसे ही क्यों जाने दिया? उसने तुम्हें भला-बुरा कहा जबकि गलती तो उसकी थी। हमारी किस्मत अच्छी थी, नहीं तो उसकी वजह से हम अभी अस्पताल में होते।

ऑटो वाले ने कहा, साहब! बहुत से लोग गार्बेज ट्रक (कूड़े का ट्रक) की तरह होते हैं। वे बहुत सारा कूड़ा अपने दिमाग में भरे हुए चलते हैं। जिन चीज़ों की जीवन में कोई ज़रूरत नहीं होती उनको मेहनत करके जोड़ते रहते हैं, जैसे क्रोध, घृणा, चिंता, निराशा आदि। जब उनके दिमाग में इनका कूड़ा बहुत अधिक हो जाता है तो वे अपना बोझ हल्का करने के लिए इसे दूसरों पर फेंकने का मौका ढूंढ़ने लगते हैं। इसलिए मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूँ और उन्हें दूर से ही मुस्कराकर अलविदा कह देता हूँ, क्योंकि अगर उन जैसे लोगों द्वारा गिराया हुआ कूड़ा मैंने स्वीकार कर लिया तो मैं भी एक कूड़े का ट्रक बन जाऊँगा और अपने साथ-साथ आसपास के लोगों पर भी वह कूड़ा गिराता रहूँगा। मैं सोचता हूँ ज़िन्दगी बहुत खूबसूरत है, इसलिए जो हमसे अच्छा व्यवहार करते हैं उन्हें धन्यवाद कहो और जो हमसे अच्छा व्यवहार नहीं करते उन्हें मुस्कराकर माफ कर दो। हमें यह याद रखना चाहिए कि सभी मानसिक रोगी केवल अस्पताल में ही नहीं रहते हैं। कुछ हमारे आस-पास खुले में भी घूमते रहते हैं। प्रकृति का नियम है कि यदि खेत में बीज न डाले जाएं तो कुदरत उसे घास-फूस से भर देती है, उसी तरह यदि दिमाग में सकारात्मक विचार न भरे जाएं तो नकारात्मक विचार अपनी जगह बना ही लेते हैं।

बहादुरगढ़-हरियाणा। एग्रीकल्चर मिनिस्टर ओमप्रकाश धनखड़ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विनीता।

कुल्लु-हि.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पूर्व उद्यान मंत्री सतप्रकाश जी, कार सेवा गुरुद्वारा के चेयरमैन मनदीप सिंह, कुलवी जी, ब्र.कु. शीलू, ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. प्रकाश व अन्य।

पलवल-हरियाणा। नवनिर्वाचित नगर परिषद चेयरमैन इंदु भारद्वाज को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए कृष्णा कॉलोनी सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु.सुदेश।

अकलेरा-राज.। समर कैम्प के दौरान समूह चित्र में बच्चों के साथ ब्र.कु. केसर।

झालावाड़-राज.। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत चंद्रभागा नदी की सफाई करने के दौरान चित्र में ब्र.कु. मीना, नगरपालिका अध्यक्ष अनिल पोरवाल व ब्र.कु. भाई बहनें।

मोतिहारी-बिहार। हेनरी बाज़ार सेवाकेन्द्र पर मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती की पुण्य स्मृति दिवस पर योग भट्ठी के पश्चात् समूह चित्र में सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. विभा, ब्र.कु. डॉ. अंजू वर्मा, ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. हरि शंकर, ब्र.कु. शंभू व अन्य।